प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़
जिला ललितपुर (उ.प्र.)

परिकल्पना : ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत' ७९७४०१०१३४
छायांकन : राजीव जैन चन्द्रपुरा, टीकमगढ़
पुण्यस्मृति : कीर्तिशेष श्री नरेन्द्र कुमार-श्रीमती रीता जैन सुपुत्र-अनुपम-मीनाक्षी जैन, संयम, श्रेया जैन लोक विहार दिल्ली
प्राप्ति स्थान : प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़, पोस्ट सोजना, ललितपुर (उ.प्र.) पिन-२८४४०५ सम्पर्क- ६३९३७००३६६
: इंजी. शिखरचन्द्र जैन, 'पुष्पांजलि', नगर भवन के पीछे, टीकमगढ़ (म.प्र.) सम्पर्क-६२६०८४००८३
प्रकाशक : पं. गुलाबचन्द्र पुष्प प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट, टीकमगढ़ (म.प्र.) पिन-४७२००१ सम्पर्क- ७९७४०१०१३४
लागत मूल्य : ५००/-
ईमेल : navagarhtirth@gmail.com
वेबसाइट : www.navagarh.in
अनुवादक : रीमा काला पुत्री नितिन कुमार काला, हैदराबाद

नवागढ़ की दूरी

1. झांसी से टीकमगढ़, अजनौर होकर - 130 किमी.
2. ललितपुर से महरौनी, सोजना होकर - 65 किमी.
3. सागर से शाहगढ़, फलहोड़ी बड़ागांव होकर - 110 किमी.
4. सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी से - 40 किमी.
5. सिद्धक्षेत्र अहारजी से - 40 किमी.
6. अतिशय क्षेत्र एपौरा जी से - 25 किमी.

PREHISTORIC ATISHYA KSHETRA NAVAGARH
District Lalitpur (U.P.)

Concept : Br. Jaikumar Jain 'Nishant' 7974010134
Cinematography : Rajiv Jain Chandrapura, Tikamgarh
Punyasmriti : Kirtishesh Shri Narendra Kumar - Mrs Rita Jain, son Anupam Meenakshi Jain, Sanyam, Shreya Jain Lok Vihar Delhi.
The place of attainment : Prehistoric Atishya Kshetra Navagarh, Post Sojna, Lalitpur (U.P.) Pin-284405 Contact- 6393700366
: Engg. Shikharchandra Jain, 'Pushpanjali', Behind Nagar Bhawan, Tikamgarh (M.P.) Contact - 6260840083
Publisher : Pt. Gulabchandra Pushp Pratishthacharya Smriti Trust, Tikamgarh (M.P.) Pin-472001, Contact - 7974010134
Cost price : 500/-
E-mail : navagarhtirth@gmail.com
Website : www.navagarh.in
Translator : Reema Kala D/o Nitin Kumar Kala, Hyderabad

Distance of Navagarh

1. From Jhansi via Tikamgarh, Ajnaur - 130 kms.
2. From Sagar via Shahgarh, Falhodi badagaon - 110 kms
3. From Lalitpur via Mehrauni, Sojna - 65 kms.
4. From Siddh kshetra Drongiri - 40 KM
5. From siddh kshetra Ahaarji - 40 km
6. From Atishai Kshetra Papora - 25km

आप अपनी दान दाशि श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के नाम से निम्न खाता नं. में भेज सकते हैं You can give your donation in the name of **Shree Atishya Kshetra Navagarh** in the following account number

State Bank of India A/c. No. 11084743888 (IFSC-SBIN 0000490)

avs graphics
9893515842

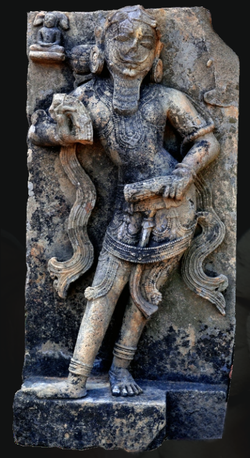

नवागढ़ विरासत
HERITAGE OF NAVAGARH

प्रागैतिहासिक साक्ष्य

८ अप्रैल १९५९ को पं. गुलाबचन्द्र पुष्प एवं साथियों द्वारा अन्वेषित नवागढ़ क्षेत्र के प्रांगण में कई जिनालयों के अवशेष, शताधिक खण्डित प्रतिमाएँ, कलाकृतियाँ तथा ८ सांगोपांग प्रतिमाएँ प्राप्त हुई थीं।
अन्य साक्ष्य निम्न हैं, यथा –

- पुरापाषाण कालीन औजार (२ से ५ लाख वर्ष प्राचीन)
- शैलाश्रय (हजारों वर्ष प्राचीन)
- पेट्रोलिक कप मार्क (१० हजार वर्ष प्राचीन)
- रॉक पेंटिंग (८ हजार वर्ष प्राचीन)
- रॉक आर्ट (गुप्तकाल–तीसरी सदी)
- मिट्टी पाषाण के मनके (२ हजार वर्ष प्राचीन)
- प्रतिमाएँ (प्रतिहार काल से आज तक)

टौरिया

मैनवार टौरिया
मुंडी टौरिया
सापौन टौरिया
सिद्धों की टौरिया
बगाज टौरिया
जैन टौरिया

रॉक्स

टॉरट्वाइज रॉक
मटकाटोर रॉक
फाईटोन रॉक
बैलेंस रॉक
मैटेलिक साउण्ड रॉक
हैंगिंग रॉक

शैलाश्रय

साधना शैलाश्रय
आचार्य शैलाश्रय
उपाध्याय शैलाश्रय
साधु शैलाश्रय
अध्ययन शैलाश्रय
शयन शैलाश्रय

शीर्ष

राजकुमार अरनाथ शीर्ष
तीर्थंकर शीर्ष
तीर्थंकर माता शीर्ष
राजाओं के शीर्ष
महारानी शीर्ष
सामंत शीर्ष
सामान्य शीर्ष

पुरातन नक्षरीय साक्ष्य

चंदेल बावड़ी
चंदेल कूप
मिट्टी पाषाण के मनके
धातु उपकरण
काष्ठ उपकरण
मृद भाण्ड उपकरण
चंदेल कालीन ईंट
मदनवर्मन प्रतिमा
पाहल प्रतिमा
महिचन्द प्रतिमा
विभिन्न आभूषण

Tauria

Mainwar tauria
Mundi tauria
Sapaun tauria
Bagaj tauria
Siddhas's Tauria
Jain tauria

Rocks

Tortoise Rock
Matkator Rock
Fytone Rock
Balance Rock
Metallic Sound Rock
Hanging Rock

Rock shelter

Sadhana Rock Shelter
Acharya Rock Shelter
Upadhyay Rock Shelter
Sadhu Rock Shelter
Study Rock Shelter
Sleeping Rock Shelter

Head

Tirthankara's Head
Prince Arnath's Head
Tirthankar Mother's Head
Maharani's Head
Kings Head
Feudal Head
General Head

Ancient Urban Evidence

Chandel Stepwell
Chandel Well
Clay Stone Beads
Metal Tools
Woodworking Tools
Pottery Equipment
Chandel Carpet Brick
Madan Varman Statue
Pahal Statue
Mahichand Statue
Various Ornaments

Prehistoric Evidence

On 8 April 1959 , Pandit Gulab Chandra Pushp and his companions discovered the remains of many Jinalayas, hundreds of fragmented statues, artifacts and 8 Sangopang statues were found in the courtyard of the Navagarh kshetra.

Other evidences are as follows, such as

- Palaeolithic tools (2 to 5 lakh years old)
- Rock shelter (thousands of years old)
- Petrolic cup mark (10 thousand years old)
- Rock painting (8 thousand years old)
- Rock art (Gupta period- 3rd century)
- Clay stone beaded (2 thousand years old)
- Statues (from Pratihara period to the present day)

मूलनायक अतिशयकारी अरनाथ स्वामी

चित्ताकर्षक, नयनाभिराम, गाम्भीर्य प्रदीप्त मुखमण्डल,
विशिष्ट केश विन्यास, केश गुच्छ सहित लम्ब कर्ण, मनोज्ञ श्रीवत्स
मानवाकार उद्दशावलि, सुडोल जंघा, विलक्षण अंगुलाकृति, युगल चमरधारी
एवं समर्पित श्रावक-श्राविका के साथ पाढ़ पीठ का अलंकरण
मीन चिन्ह द्वारा, देशी पाषाण पर पन्ना की पॉलिश से शोभायमान, धरातल से
१५ फीट नीचे भौंयरे में विराजमान ४ फीट ९ इंच
अवगाहना वाले अरनाथ भगवान् आज भी जन-जन की
मनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे हैं।

THE MAGESTIC IDOL OF LORD ARNATH

Embodies countless astounding features. His idol captures one's mind, leaves their eyes twinkling in awe and his profound lustre calms their soul. It has flawless features like long curly hair, big ears, well-shaped thighs and belly, remarkably shaped fingers and is adorned by his symbol: Fish. The idol is surrounded by passionate devotees and is polished by the native panna polish. The standing idol is placed fifteen feet underground and measures four feet nine inches. It is believed that this idol can fulfil the wishes of all devotees.

कलात्मक शीर्ष

नवागढ़ में संगृहीत विलक्षण, मनोज्ञ, चित्ताकर्षक,
विभिन्न शासकों, सामंतों, महारानियों, महिलाओं के
शीर्षों से यह राजनैतिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक महानगर
सिद्ध होता है। इन विभिन्न मुकुट शीर्षों की कला एवं शिल्प
पुरातात्त्विक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है।
इन शीर्षों का शासायनिक संरक्षण अनिवार्य है।

ARTISTIC SCULPTURES

The sculptures discovered in Navagarh bring peace to one's soul and attracts their attention. These sculptures are of various rulers, queens, ministers and common folk. These sculptures give an image that Navagarh was a political, educational and a commercial metropolis. These sculptures are important from an archaeological, cultural and historical standpoint.
Scientific protection of these heads is mandatory.

संरक्षित मूर्ति शिल्प

नवागढ़ में संगृहीत द्विशताधिक मूर्ति एवं कलाशिल्प
विशाल जिनालयों में सुन्दर, मनोज्ञ, आकर्षक, प्राचीन
दिगम्बर प्रतिमाओं के साथ नगरीय सभ्यता, जैन बाहुल्य क्षेत्र
राजनैतिक, पुरातात्त्विक नगर की स्थापना के साक्ष्य हैं।

उपरि-परिकर में सम्पूर्ण कलात्मकता दृष्टव्य है।
यथा- त्रिछत्र, मृदंगवादक, अभिषेक करते गजराज,
सम्पूर्ण कलश, तीर्थंकर समूह आदि शोभायमान एवं
चित्ताकर्षक हैं।

PRESERVED SCULPTURES

The ancient idols and artifacts found in Navagarh are over two hundred in numbers. These enormous temples and idols show that Navagarh was a beautiful Jain -dominated urban civilization with political and archaeological importance. Marvellous artistry is visible on the upper part of the idol. Finer examples of such artistry are the three chhatras above the head of the Jain idol, which are representation of a musician playing “Mridung” at the lower end of the Jain idol and elephants performing “Abhishek” on the graceful Tirthankars collectively etc. The artisanship on these idols truly stirs one’s soul.

पुरातन वृषभ रथ

अष्ट धातु से निर्मित लघुकाय
वृषभ रथ की सम्पूर्ण रचना
मनोज्ञ एवं आकर्षक है।

वृषभ, सारथी, पहिए एवं शिखर
के साथ सम्पूर्ण रथ भारतीय कला
एवं सांस्कृतिक विरासत का विशिष्ट
शिल्प है।

ANCIENT VRASHABH (BULL) CHARIOT

The entire composition of the miniscule Vrishabha chariot is made of “Ashta” (eight) metals is mind-blowing and attractive. The complete chariot with Vrishabha, charioteer, flawless wheels and top are a pinnacle of distinctive craft of Indian art and cultural heritage.

शैलचित्र

मानवीय सभ्यता का उत्थान पुरा पाषाण काल से
वर्तमान तक सदैव विकासशील रहा है।
प्राकृतिक वन्य जीवन-यापन करते हुये मानव ने
गुफाओं एवं कंदराओं का आश्रय बनाया, वहाँ रहते हुये
उन्होंने प्राकृतिक रंगों से उस काल के परिवेश का चित्रण
करते हुये वन्य पशु, जन-जीवन, प्राकृतिक दृश्यों को
मुख्यता से अंकित किया है।

इस विधा से नवागढ़ की जैन पहाड़ी पर स्थित कच्छप शैलाश्रय में
विभिन्न शैलचित्रों के समूहों में जैनदर्शन के विशेष आयाम यथा-
वृषभ, पंचमहाव्रत, कषायनिग्रह, निषीथिका, केवलज्ञान सूर्य एवं
सिद्धत्व का सांकेतिक चित्रण किया गया है।
नवागढ़ में उत्खनन से प्राप्त प्राचीन ताम्र मुद्रायें भी दर्शनीय हैं।

ROCK PAINTING

The rise of human civilization has always been developing from the Palaeolithic period to the present. In the era when humans lived in the wildlife, they found shelter in caves. While they dwelled in caves, they used natural colours to depict their life. There are several paintings of water-bodies, wildlife and other natural marvels. With this method, the special dimensions of Jain philosophy such as Vrishabha, Panchmahavrata, Kashaynigraha, Nishithika, Kevalgyan Surya and Siddhatva have been depicted in groups of various rock paintings in Kachhap rock shelter located on the Jain hill of Navagarh.
Ancient copper coins obtained from excavation in Navagarh are also sightworthy.

जीवनोपयोगी उपकरण

नवागढ़ में खनन से प्राप्त धातु उपकरणों के साथ
जीवनोपयोगी सामग्री यथा- लकड़ी की पोली, चौथिया
पैला (अनाज मापक उपकरण), लकड़ी की पसात
तौलने के बाँट, धातु की चुनौटी, घोड़ा, हिरण, वृषभ,
पानदान, शृंगारदान, पिचकारी, दवात, कलश एवं
कांसा, तांबा, पीतल के रसोई के बर्तन संगृहीत हैं।

BASIC EQUIPMENT FOR SUSTENANCE

The remains of several basic necessities of human sustenance were discovered after mining in navagarah. Some of these preserved remains are wooden “poli”, “chauthiya paila” (grain measuring instrument), big wooden plates, weights for measurement, horses, deer, taurus, make-up box, ink-pot, “paan daan”, several copper, bronze and brass kitchen utensils etc.

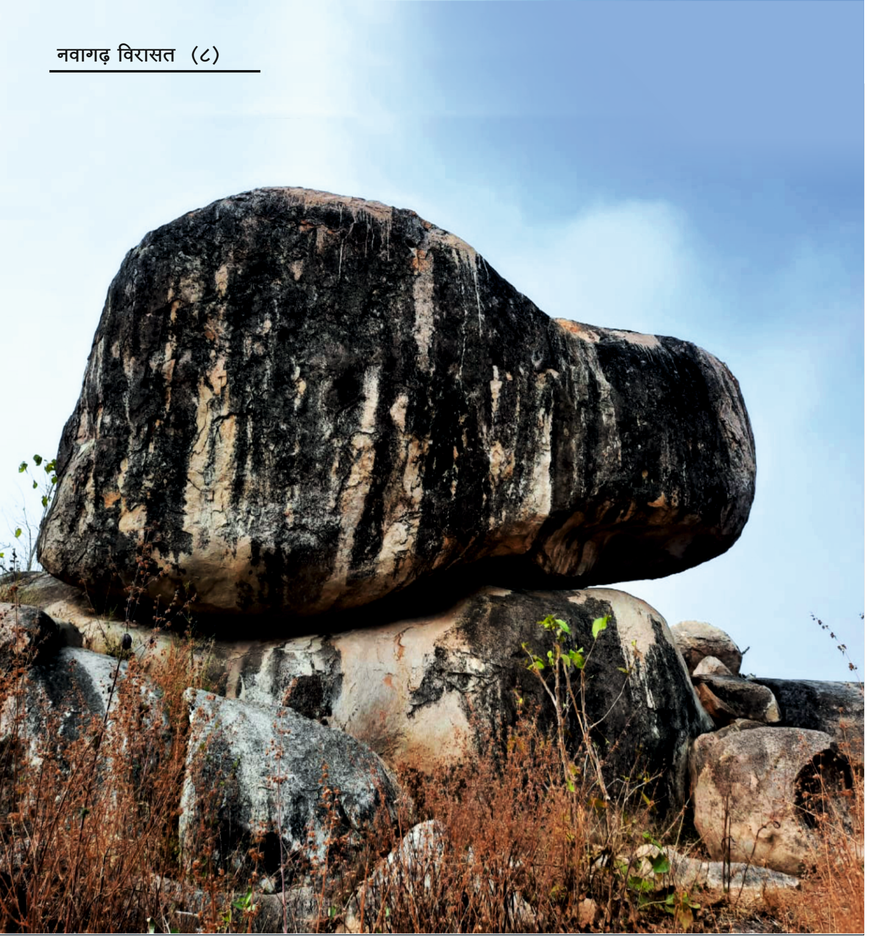

कच्छप शिला

नवागढ़ से ३ किमी. दूर पश्चिम में फाईटोन शिलाओं के निकट जैन पहाड़ी पर २५ फीट लम्बी, १५ फीट ऊँची कच्छप शिला स्थित है। शिला के अधोतल में ब्र. जयकुमार 'निशांत' द्वारा अन्वेषित ''चितेरों की चंगेर'' के नाम से प्रसिद्ध शैलचित्रों की शृंखला प्राकृतिक रंगों से बनाई गयी थी, जो संरक्षण के अभाव एवं मौसम की प्रतिकूलता से क्षत-विक्षत हो चुकी है।

KACHCHHAP ROCK

The iconic kachchhap rock is located about 3 kms from Navagarh and is 25 feet long and 15 feet high. This rock is located towards the west of Navagrah near the jain fytone hills. It is worth admiring the series of famous paintings at the bottom of the rock. This series was painted using natural dyes & discovered by brahmachari jaikumar nishant and is called "chiteron ki changer". Unfortunately, this series has been irreversibly damaged by adverse weather conditions and lack of protection.

चंदेलकालीन बावड़ी

क्षेत्र के पूर्व में ५०० मीटर की दूरी पर १००० वर्ष प्राचीन ४० फीट चौड़ी एवं ३५ फीट गहरी, ईंट एवं पाषाण से निर्मित बावड़ी चंदेल शासक मदनवर्मन की धरोहर है, जो रख-रखाव के अभाव में नष्ट होने की कगार पर थी, जिसका जीर्णोद्धार नवागढ़ समिति के प्रयास से किया गया है।

इस बावड़ी में दोनों ओर से सीढ़ियाँ इस प्रकार निर्मित की गई हैं कि व्यक्ति पानी की सतह तक जाकर पानी ला सकता है।

CHANDEL KALEEN STEP WELL

500 meters to the east of the kshetra, 1000 years old, 40 feet wide and 35 feet deep, built of brick and stone, is the heritage of Chandel ruler Madanvarman, which was on the verge of destruction due to lack of maintenance. This has been renovated with the effort of Navagarh committee.
In this stepwell, stairs have been constructed from both the sides in such a way that a person can bring water by going to the surface of the water.

पुरापाषाण औजार

नवागढ़ में भौगोलिक परिवर्तन से निर्मित विभिन्न टौरियों में भूमिगत पुरापाषाण कालीन संस्कृति काल के आदिमानव द्वारा प्रयुक्त पाषाण औजारों की शृंखला प्राप्त हुई है। डॉ. गिरिराज कुमार (महासचिव रॉक आर्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया, आगरा) के अनुसार इनका काल प्री-पैलियोलिथिक (२ से ५ लाख वर्ष प्राचीन), मिडिल-पैलियोलिथिक (३५ हजार से २ लाख वर्ष प्राचीन), पोस्ट-पैलियोलिथिक (३५ हजार वर्ष प्राचीन) है।

पेट्रोलिक कप-मार्क

सिद्धों की टौरिया की विशाल चट्टान पर ६०X६९X२६.५ मिमी. का कप-मार्क प्राप्त हुआ है। जिसके क्रिस्टलों का आकार १.२-०.४ मिमी. है। माइक्रोस्कोपिक परीक्षण से इसके बनाने की पद्धति, रचना एवं आकार से यह १० हजार वर्ष प्राचीन संस्कृति को सिद्ध करता है।

मिट्टी एवं पाषाण के मनके

प्राकृतिक जीवन एवं प्राचीन संस्कृति के शृंगार को दर्शाने वाले दो हजार वर्ष प्राचीन मिट्टी एवं पाषाण के मनके उस काल की मानव सभ्यता, विकास एवं नगरीय जन-जीवन के साक्ष्य हैं।

PALAEOLITHIC TOOLS

In Navagarh, a series of stone tools were used by primitive people of the palaeolithic period have been found in various taurias built due to geographical changes. According to Dr. Giriraj Kumar (general secretary Rock Art Society of India, Agra), their period is pre-palaeolithic (2 to 5 lakh years old), middle-palaeolithic (35 thousand to 2 lakh years old), post-palaeolithic (35 thousand years old).

PETROLIC CUP

On the giant rock of Sidha's tauria 60 x 69 x 26.5mm cup mark has been found. The size of its crystals is 1.2-0.4 mm. Its method of making, composition and size under microscopic examination proves it to the ancient culture of 10 thousand years.

CLAY AND STONE BEADS

Approximately two thousand years old clay and stone beads that show the natural life and makeup of ancient culture are the evidence of human civilization, development and urban life of that period.

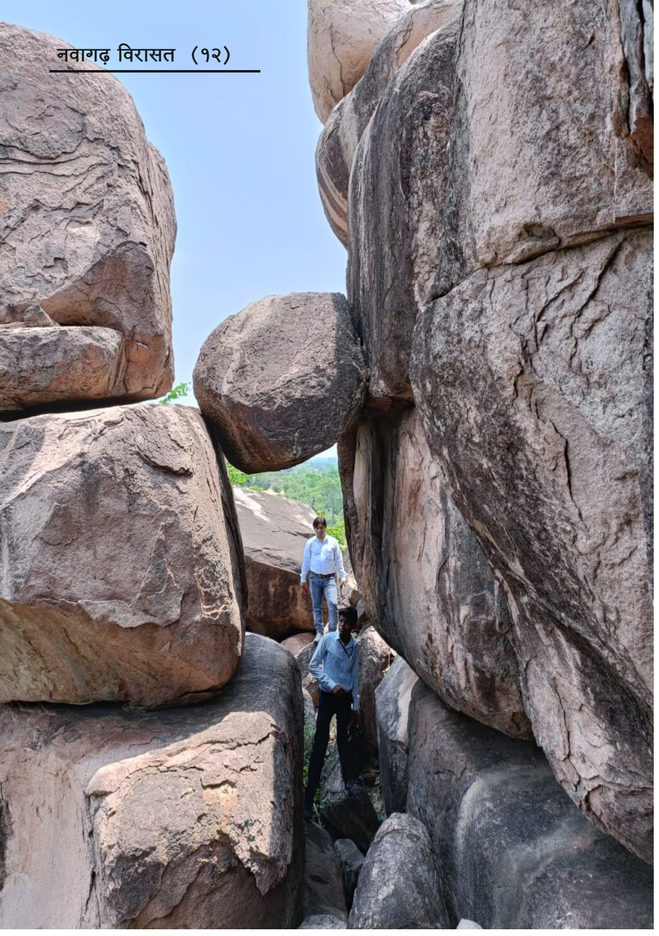

बैलेंस रॉक

जैन पहाड़ी के पीछे भौगोलिक परिवर्तन से कई चट्टानों की शृंखला एक-दूसरे पर अद्भुत रूप से व्यवस्थित है, इनके मध्य कौतुक पूर्ण अधर में लटकती विशाल शिला दर्शनीय एवं आकर्षण का केन्द्र है, पर्यटक इस पर पहुँच कर रोमांचित एवं आनंदित होते हैं।

BALANCE ROCK

Due to the geographical change behind the Jain hill, a series of rocks are arranged wonderfully on each other, the huge rock hanging in the balance between them is the centre of sight and attraction, tourists are thrilled and delighted to reach it.

फाईटोन (फाईव स्टोन) रॉक

फाईटोन रॉक प्राकृतिक रूप से ३०-४० फीट लंबी पाँच चट्टानें हैं, जिन पर पाषाण खंड अद्भुत एवं आश्चर्यपूर्ण ढंग से अवस्थित हैं इनके बीच में अध्ययन शैलाश्रय स्थित है। इसकी एक चट्टान ४० डिग्री झुकी हुई है, जो हैंगिंग रॉक के रूप में प्रसिद्ध है।

FYTONE (FIVE STONE) ROCK

In a natural sense, the Fytone Rocks are five rocks that are 30-40 feet high. Upon these rocks, the stone blocks are placed in an extremely marvelous manner. In the middle of the stone blocks, the study rock shelter is located. One of its rock is inclined 40 degrees, which is famous as Hanging Rock.

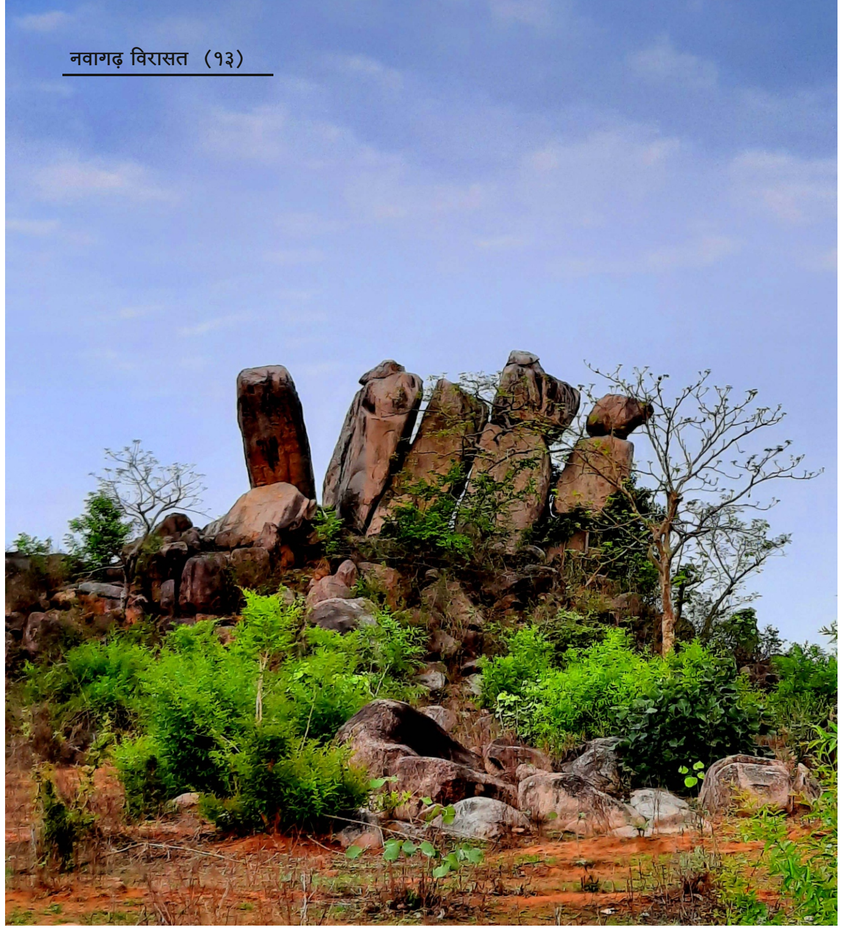

संत शयन शैलाश्रय

नवागढ़ में तीसरी सदी से जैन संतों का श्री विहार होने लगा था। उस काल में यह महत्त्वपूर्ण साधनास्थल एवं गुरुकुल परम्परा का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ संतों ने साधनास्थलों के साथ शयन शैलाश्रय भी अन्वेषित किये हैं, जिनमें से जैन पहाड़ी की कच्छप शिला के आधार में शैलचित्रों के पास एक संत शयन स्थल है। जिसकी ऊपरी सतह संतों के वर्षों तक शयन करने से अत्यंत चिकनी हो गई है, जिसका मृदु एवं कोमल स्पर्श विशेष अनुभूति देता है।

SLEEPING SHELTER FOR JAIN SAINTS

Since the 3rd Century, Navagarh witnessed the "Shri Vihar" of Jain Saints. During that period this shelter was an important spiritual place and the main center of the Gurukul tradition. Here the saints have also discovered the sleeping rock shelters along with the places of worship, of which there is a saint sleeping place near the rock paintings at the base of the Kachchhap rock of the Jain hill. The upper surface of this rock has become extremely smooth due to saints slept on it since years. The soft texture of this rock is considered special.

रहस्यमय शैलाश्रयों के आत्मसाधक

क्षुल्लक श्री चिदानंद जी महाराज

आपने स्वप्रेरणा से सन् १९६५ एवं १९६६ में नवागढ़ में २ चातुर्मास किये। आप आहारचर्या के पश्चात् बीहड़ में दो-दो, तीन-तीन दिनों के लिए प्रस्थान कर जाते थे, पर साधना स्थली कहाँ एवं क्या थी? यह ग्रामीणजनों के लिए रहस्य ही था, क्योंकि खोजने पर भी आपका पता नहीं मिलता था। इस रहस्य का उद्घाटन वर्तमान में ब्र. जयकुमार जी 'निशांत' द्वारा अन्वेषित संत शयन एवं साधना शैलाश्रय के माध्यम से हुआ।

आपने जैनागम के गूढ़ रहस्यों को जैन, जैनेतरों को बताते हुये अहिंसक एवं व्यसन मुक्त जीवनशैली का मार्ग प्रशस्त किया था।

A DEVOTEE OF MYSTICAL ROCK SHELTERS

KHSULLAK SHRI CHIDANAND JI MAHARAJ

He performed 2 chaturmas on his own inspiration in 1965 and 1966 in Navagarh. He used to leave for two- three days in the ravine after the Ahaarcharya, but where and what was the place of spiritual practice? It was a mystery to the villagers, because even after searching his address could not be found. This secret was revealed at present through the sant shayan and sadhana shalashraya, explored by Br. Jaikumar ji 'Nishant'. He had enlightened the path of non-violence and addiction-free lifestyle by telling Jains and non- Jains to the esoteric mystery of Jainagam.

नवागढ़ क्षेत्र अन्वेषक
पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

प्रतिष्ठा जगत के पुरोधा
प्रतिष्ठा पितामह
सभी संतों में लोकप्रिय
आगम एवं सिद्धांत के मर्मज्ञ
सप्तम प्रतिमाधारी
जिन्होंने समर्पित किया
अपना सम्पूर्ण जीवन ...।

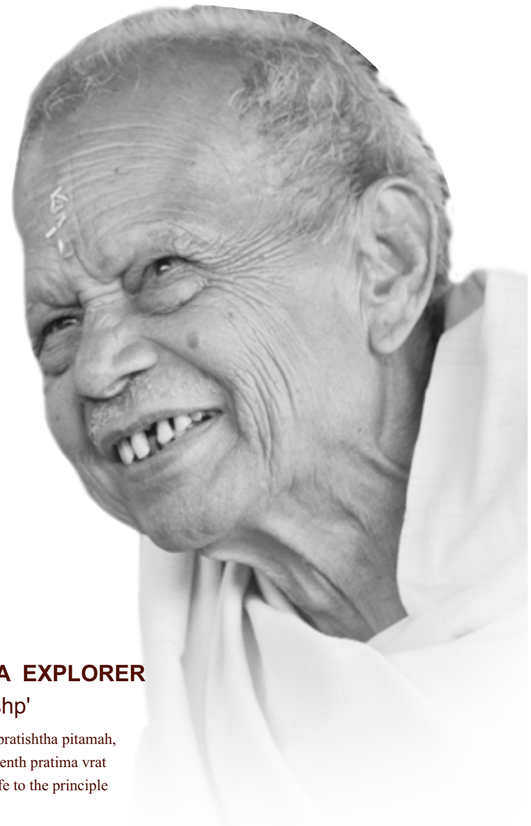

NAVAGARH KSHETRA EXPLORER
Pt. Gulabchandra 'Pushp'

The leader of the world of prestige, pratishtha pitamah, popular among all the saints, the seventh pratima vrat holder who has devoted his whole life to the principle of wisdom and philosophy.

पद्मासन सर्वतोभद्र

विलक्षण चतुर्मुखी पद्मासन सर्वतोभद्र में चारों प्रतिमाएँ अंडाकार आसन पर विराजित हैं। इनमें तीन का आसन सामान्य है लेकिन एक के आसन पर दाहिनी ओर श्रुतपीठ एवं चरण उत्कीर्ण हैं जो इस बिम्ब में देव-शास्त्र एवं गुरु को दर्शाते हैं।
ऐसा बिम्ब अन्यत्र अद्भुत, दुर्लभ एवं विशिष्ट है।

PADMASANA SARVATOBHADRA

In the unique Chaturmukhi Padmasana Sarvatobhadra, the four idols are seated on an elliptical posture. Out of these , the posture of three is common, but on the right side of fourth idol's the Shrutapeeth, Kamandal and Charan are engraved, which in this image represent the Dev, Shastra and Guru.
Such an idol is very wonderful, rare and is specific.

कायोत्सर्ग मुद्रा

जैन पहाड़ी के साधना शैलाश्रय में गुप्तकालीन उत्कीर्ण साधु की कायोत्सर्ग आकृति यहाँ दिगम्बर संतों की तीसरी सदी के पहले से श्री विहार की साक्ष्य है। इसी गुफा की दूसरी चट्टान पर उत्कीर्ण युगल चरण चिन्ह दिगम्बर संतों की साधना एवं प्रवास स्थली के साक्ष्य हैं।

KAYOTSARGA MUDRA

The Sadhna Shailashray of the Jain hill of Navagarh has the figure of Digamber saints engraved in it. These Digamber saints are in Kayotsarga mudra and are said to have been engraved before the 3rd century. The couple footprints engraved on the second rock of this cave are evidence of the place of worship and migration of Digambar saints.

प्रतिहार कालीन ऋषभनाथ

सन् १९५९ में किये गये खनन कार्य में प्राप्त यह प्रतिहार कालीन (सातवीं सदी) का ऋषभनाथ बिम्ब आठ फीट उत्तुंग कार्योत्सर्ग मुद्रा में विशेष केश विन्यास, मुखाकृति एवं उड़ते हुये मालाधारी से शोभायमान है।

PRATIHAR KALEEN RISHABHNATH

This Lord Rishabhnath idol of Pratihar period (7th century) obtained in the mining work done in 1959 is adorned with 8-foot height, Kayotsarga mudra, hairstyle, face and flying wreath.

पुरातत्त्वान्वेषक–

श्री नीरज जैन, सतना	सन् १९६१
डॉ. ए.पी. गौड़, लखनऊ	सन् २०१३
डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन, श्रीमहावीर जी	सन् २०१३
बा. ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत', टीकमगढ़	सन् २०१४, २०१८
डॉ. स्नेहरानी जैन, सागर	सन् २०१५
डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु, दमोह	सन् २०१५
डॉ. के.पी. त्रिपाठी, टीकमगढ़	सन् २०१५
डॉ. एस.के. दुबे, झांसी	सन् २०१६
श्री नरेश पाठक, ग्वालियर	सन् २०१६
श्री हरिविष्णु अवस्थी, टीकमगढ़	सन् २०१६
डॉ. गिरिराज कुमार, आगरा	सन् २०१७, २०१८
(राष्ट्रीय सचिव, रॉक आर्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया)	
डॉ. बी.व्ही खरबड़े, एन.आर.एल.सी. लखनऊ	सन् २०१७
डॉ. मारुति नंदन प्रसाद तिवारी	सन् २०१८
(ऐमिरेट्स प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)	
डॉ. एस.एस. सिन्हा, वाराणसी	सन् २०१८
डॉ. अर्पिता रंजन (भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, दिल्ली)	सन् २०१९
डॉ. ब्रजेश रावत, लखनऊ	सन् २०२०
डॉ. सुलतान सलाहुद्दीन	सन् २०२२

ARCHAEOLOGIST

Shri Neeraj Jain, Satna	1961
Dr. A.P. Goud, Lucknow	2013
Dr. Kasturchandra Suman, Shri Mahavir Ji	2013
Ba. Br. Jaikumar Jain 'Nishant', Tikamgarh	2014 , 2018
Dr. Snehrani Jain, Sagar	2015
Dr. Bhagchandra Bhagendu, Damoh	2015
Dr. K. P. Tripathi, Tikamgarh	2015
Dr. S. K. Dubey, Jhansi	2016
Shri Naresh Pathak, Gwalior	2016
Shri Harivishnu Awasthi, Tikamgarh	2016
Dr. Giriraj Kumar, Agra	2017, 2018
(National Secretary, Rock Art Society of India)	
Dr. B. V Kharbade, N. R. L. C. Lucknow	2017
Dr. Maruti Nandan Prasad Tiwari	2018
(Emirates Professor, Kashi Hindu University)	
Dr. S.S. Sinha, Varanasi	2018
Dr. Arpita Ranjan	2019
(Archaeological Survey of India, Delhi)	
Dr. Brajesh Rawat, Lucknow	2020
Dr. Sultan Salahuddin , Sagar	2022

अभिलेखीय साक्ष्य

यहाँ प्रतिहार कालीन (सातवीं सदी)
मूर्तियों के साथ
संवत् ११२३ के ऋषभदेव
संवत् ११८८ के उपाध्याय
संवत् ११९५ के महावीर
संवत् १२०२ के शांतिनाथ
संवत् १२०३ के मानस्तंभ
संवत् १४९० की चौबीसी
संवत् १५४८ के लघु पार्श्वनाथ
शक् संवत् १६६४ के ताम्र पार्श्वनाथ,
संवत् १८८५ के विमलनाथ सहित
संवत् २०७२ तक प्रतिष्ठित
कई मूर्तियाँ वेदियों में विराजमान हैं।

ARCHIVAL EVIDENCE

Here the pratihara period (7th century)
with sculptures
Rishabhdev of Samvat 1123 (year 1041)
Upadhyay of Samvat 1188 (year 1110)
Mahavir of Samvat 1195 (year 1117)
Shantinath of Samvat 1202 (year 1124)
Manastamb of Samvat 1203 (year 1125)
Chaubesi of Samvat 1490 (year 1143)
Laghu parshvanath of Samvat 1548 (year 1470)
Tamra parshvanath of Samvat 1664 (year 1586)
Eminent till Samvat 2072 (year 1994) including
vimalnath of samvat 1885 (year 1807)

श्रेष्ठी पाहल

नवागढ़ में साबू पाहल की प्रशस्ति एवं मूर्ति खजुराहो में संगृहीत पाहल मूर्ति के समान है, जिससे यह सिद्ध होता है कि साबू पाहल ने नवागढ़ के साथ-साथ खजुराहो में भी मंदिरों का निर्माण संवत् १२१५ में कराया था।

इसके साथ यहाँ श्रेष्ठी महिचन्द्र एवं रासल की मूर्ति भी संगृहीत है, जो चंदेल शासन में जैन श्रेष्ठियों के प्रभाव एवं वर्चस्व को दर्शाते हैं। आपने संवत् ११९५ में महावीर प्रतिमा एवं संवत् १२०३ में चारों मानस्तंभ की प्रतिष्ठा का सौभाग्य प्राप्त किया था।

SHRESTHI PAHAL

The citation and idol of Sabu Pahal in Navagarh is similar to that of Pahal idol collected in Khajuraho, which proves that Sabu Pahal built temples in Navagarh as well as Khajuraho in Samvat 1215.

Along with this, the idols of Shresthi Mahichandra and Rasal are also collected, which show the influence and supremacy of Jain superiors in the Chandela rule. He had the privilege of consecrating the Mahavir statue in Samvat 1195 and the four Manastambha in Samvat 1203.

पंचतीर्थी पार्श्वनाथ बिम्ब

देशी पाषाण का उत्कृष्ट शिल्पयुक्त भगवान् पार्श्वनाथ का मनोज्ञ बिम्ब, जिसके सिंहासन के मध्य सर्प पूंछ का चिन्ह है, जो भगवान् को कुंडली आसन प्रदान करता हुआ सिरोपरि, आकर्षक ७ फण युक्त फणावली बनाता है। चंवरधारी, पुष्पमालधारी एवं मृदंग वादक की सुन्दर आकृति तथा ऊपर चार पद्मासन बिम्ब उत्कीर्ण हैं, जिनसे इसे पंचतीर्थी स्वरूप प्राप्त होता है।

PANCHTIRTHI PARSHWANATH IDOL

Bhagwan Parshvanath Manogya idol, exquisitely crafted of native stone, with a snake-tail sign in the center of his throne, which gives saffron a kundli asana, forms a lofty, attractive 7 hooded pedestal. The beautiful figure of Chanvardhari, Pushpamaldhari and Mridang player and four Padmasan images are engraved above, from which it gets the form of Panchtirthi.

पिच्छी चिन्ह सहित उपाध्याय

यहाँ उपाध्याय परमेष्ठी की कई मूर्तियाँ अन्वेषित की गई हैं। मानस्तंभों में तीन ओर अरिहंत एवं एक ओर उपाध्याय का अंकन तथा शास्त्र सहित उपाध्याय, सर्वतोभद्र में उपाध्याय, तीर्थंकरों के समान आसन (पाढ पीठ) में मयूर पिच्छि का अंकन विशेष है। जो दिगम्बर संतों की अहिंसक जीवनशैली को दर्शाती है। यह सभी बिम्ब यहाँ पुरातन गुरुकुल परम्परा को दर्शाते हैं।

UPADHYAY WITH PICCHIKA (Peacock Feathers)

Many idols of upadhyay parmeshthi have been discovered here. In Manastambhas, the engraving of Arihant on three sides and Upadhyay on fourth side has been found and Upadhyaya with scriptures, Upadhyay in Sarvatobhadra, peacock pichhika engraving in the asana (foot-peeth) like Tirthankaras is unique, which shows the life of Digamber saints who lived with non violence (Ahimsa). All these images depict the ancient gurukul tradition here.

ताम्रपार्श्वनाथ बिम्ब

शक् संवत् १६६४ में प्रतिष्ठित यह मनोज्ञ एवं अलौकिक बिम्ब अत्यंत प्रभावशाली है। जिसके पीतल समचौकोर आसन पर चारों ओर प्रशस्ति उत्कीर्ण है। सामने की ओर धरणेन्द्र एवं पद्मावती अपने वाहन कूर्म और मयूर सहित विराजमान हैं। आसन के ऊपर कमलाकृति पर ताम्र पार्श्वनाथ भगवान् विशेष आसन जिसमें केवल नितम्ब भाग आसन पर है, शेष जंघा एवं घुटने आसन से बाहर हैं, भगवान् के अधर में विराजमान होने का प्रतीक है।

COPPER IDOL OF LORD PARSHVANATH

This psychic and supernatural image, established in Shak Samvat 1664, is very splendid. The brass square seat is engraved all around. In front, Dharanendra and Padmavati are seated with their vehicles Mayur and Kurma. The copper on the lotus figure above the seat is a symbol of Parshvanath Bhagwan sitting in the balance of a special posture in which the cable is on the buttocks part, the rest of the thigh and knees are out of the seat.

चंदेल शासक मदनवर्मन

विनयावनत मुद्रा में दोनों हाथों के मध्य खंडित पुष्पमाला लिये चंदेल शासक मदनवर्मन की यह कृति विलक्षण है, इसके दाहिने शीर्ष पर जैन तीर्थंकर आकृति से सिद्ध होता है कि आप दिगम्बर जैनधर्म के प्रति समर्पित रहे हैं। आपने मदनपुर एवं मदनेशपुर (अहार) क्षेत्र की स्थापना के साथ महोबा, देवगढ़, पपौरा एवं नवागढ़ में भी जैन मंदिर बनवाये हैं सौंदर्य एवं कला सौष्ठव, केश सज्जा एवं केश अलंकरण के साथ विशेष जूड़ा, कर्ण कुंडल, कंठाभरण, रत्तनहार, कठि मेखला, लहराता हुआ उत्तरीय, त्रिभंग मुद्रा, पाद विन्यास के साथ पैरों में नुपूर एवं कवधनी आदि आभरणों से सुसज्जित इस प्रतिमा में ग्रामीण जनों की आस्था बगाज माता के रूप में है।

MADANAVARMAN: THE CHANDELA RULER

This work of Chandela ruler Madanvarman with a broken garland between both hands in Vinayavanat posture is unique. The Jain Tirthankar figure on its right top proves that he had been devoted to Digambar Jainism. Along with the establishment of temples in Madanpur and Madneshpur (ahar) Kshtra he also established temples in Mahoba, Deogarh, Papora and Navagarh.

The village people in this statue are embellished with decorations like beauty and art, unique bun made with their hair, hair ornamentation, ear coil, earpiece, breast, hard neck, tribhang posture, foot configuration, nupur and girdle etc. The local villagers view this splendid idol as “bagaz mata” and have faith in it.

तीर्थंकर माता

१८वें तीर्थंकर अरनाथ की माता महारानी मित्रसेना का यह बिम्ब विशिष्ट, मनोज्ञ, आकर्षक, कमनीय भौंहोंयुक्त विशालाक्षी,सुन्दर केश विन्यास एवं अलंकरण के साथ कुण्डल, कंठहार, रत्तनहार, लम्बमाला से सुशोभित अनुपम सौन्दर्य युक्त अत्यंत विलक्षण है।

MOTHER OF LORD ARNATH

This image of maharani Mitrasena, mother of 18th Tirthankara Arnath, is majestic. It is adorned with beauty and is graceful and attractive. It has brows, beautiful hairstyle and ornamentation, adorned with coils, breast necklaces and long garlands.

अकलंक निकलंक

कुमार अकलंक एवं निकलंक, एक ही पाषाण फलक पर गलहार, स्तनहार, कटि मेखला सहित, विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित बिम्ब, जिसमें अग्रज एवं अनुजाकृति स्पष्ट दृष्टव्य है। अग्रज के बायें हाथ में ताड़पत्रीय लम्ब शास्त्र एवं दाहिने हाथ में कलम नवागढ़ में प्राचीन गुरुकुल परम्परा के आदर्श को स्थापित करते हैं।

इन दोनों कुमारों में अकलंक एकपाठी एवं निकलंक द्विपाठी थे। ये दोनों कांची के बौद्ध मठ में गुप्त रूप में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। भेद खुलने पर जिनशासन के संरक्षण हेतु निकलंक ने बलिदान देकर अकलंक के प्राण बचाये थे।

AKLANK NIKLANK KUMAR

Aklank and Niklank, on the same stone plate, including galahar, sthanhar, kati mekhla, image decorated with various ornaments, in which the foreground and the iconography are clearly visible. The palm leaf scripture in the left hand and the pen in the right hand establish the ideal of the ancient gurukul tradition in Navagarh.

Among these two kumars, Aklank was ekpathi and Niklank was dwipathi. Both of them were receiving education in secret in the Buddhist Monastery of Kanchi. When the distinction was uncovered, for the protection of Jinshasan, Niklank had saved the life of Aklank by sacrificing himself.

श्री नवागढ़ गुरुकुलम्

SHRI NAVAGARH GURUKULAM

प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प' की स्मृति में संचालित श्री नवागढ़ गुरुकुलम् में प्रतिभाशाली छात्रों के लिए धार्मिक संस्कारों के साथ आधुनिक शिक्षा का नवीन आयाम स्थापित किया गया है।।

A new dimension of modern education with religious rites has been established for meritorious students in Shri Navagarh Gurukulam, organized in the memory of Pandit Gulabchandra 'Pushp'.

नवागढ़ महोत्सव

प्रतिवर्ष आयोजित नवागढ़ महोत्सव, बुन्देली लोककला, लोकनृत्य, लोकगीतों के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजनों के लिए प्रसिद्ध है जिसमें हजारों श्रद्धालुओं का समर्पण दृष्टव्य है। **– गजरथ महोत्सव सन् 2011**

NAVAGARH FESTIVAL

The Navagarh Mahotsav, organized annually, is famous for cultural and religious events with Bundeli folk art, folk dance, folk songs, in which the dedication of thousands of devotees is visible.

- Gajrath festival 2011.